घर की जरूरतों ने मुसाफिर बना दिया गजल लिरिक्स

घर की जरूरतों ने,
मुसाफिर बना दिया।bd।

दोहा – रस्ते भर रो रो कर पूछा,
हमसे पांव के छालों ने,
बस्ती कितनी दूर बसा ली,
दिल में बसने वालों ने।
चाहा था जिसको टूट कर,
वह आखिर चला गया,
इस दिल से मोहब्बत का,
मुसाफिर चला गया।
बेरंग है आज तक,
वह तस्वीर प्यार की,
पूरा किए बगैर,
मुसव्विर चला गया।

देखे – जिंदगी है मगर पराई है।

फिकरों ने रंग चेहरे का,
मेरे उड़ा दिया,
घर की जरूरतों ने,
मुसाफिर बना दिया।bd।

धोखा दिया फरेब किया,
दिल चुरा लिया,
उसने मेरी वफाओं का,
ऐसा सिला दिया।bd।

दुश्मन ने मुझको देखकर,
खंजर उठा लिया,
मुझको तो मेरी मां की,
दुआ ने बचा लिया।bd।

मैंने कहा था उनसे,

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

जलाने को एक चिराग,
उसने इसी बहाने,
मेरा घर जला दिया।bd।

फिकरों ने रंग चेहरे का,
मेरे उड़ा दिया,
घर की जरूरतो ने,
मुसाफिर बना दिया।bd।

गायक – श्री घनश्याम गुर्जर।
प्रेषक – विष्णु पटेल।
8319761994

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com